दिनांक - 26-03-2020

वर्ग - B.A पार्ट (1) प्रतिष्ठा इतिहास
(History Honours)

अध्ययन की सुलभता के लिये इतिहास को विभिन्न कालो में बाटा गया है।

(1) पूर्व ऐतिहासिक काल :- इसके तहत मानव इतिहास के प्रारम्भ से लगभग 3000 ईसा पूर्व तक का काल आता है। इतिहास के इस काल खंड का अध्ययन हेतु केवल पुरातात्विक सामग्रिया ही उपलब्ध है।

(2) आद्य ऐतिहासिक काल (3000 ईसा पूर्व से 600 ई० तक) :- यद्यपि इतिहास के इस काल खंड के लिये पुरातात्विक एवं साहित्यिक दोनो स्त्रोत उपलब्ध है। तथापि पुरातात्विक स्त्रोतो का ही सिर्फ उपयोग हो पाता है।

(3) ऐतिहासिक काल (600 ई० के पश्चात का काल) इस काल के अध्ययन के लिये पुरातात्विक साहित्यिक तथा विदेशियो के विवरण भी मौजूद रहते है।

सभ्यता के विकास का सिद्धान्त :- सभ्यता के विकास के दो प्रकार के सिद्धान्त है
(1) विकास वादी (2) विसरण वादी

(1) विकास वादी सिद्धान्त :- सांस्कृतिक विकास

की यह धारणा जीव वैज्ञानिक विकास के सिद्धान्त के अनुरूप स्थापित की गई। ल्यूस मार्गन ने 1827 ई० यह विचार प्रस्तुत किया था कि सभी सांस्कृतियाँ जंगली अवस्था, बर्बर, अवस्था एवं सभ्यता की अवस्था से गुजरती है।

(2) विसरणवादी सिद्धांत :- यह सिद्धान्त यह मान कर चलता है कि प्रत्येक महत्वपूर्ण मानवीय आविष्कार पहले एक स्थान पर हुआ और फिर व्यापार, जनसंख्या, प्रवास, सांस्कृतिक संपर्क या साहसी अन्वेषण के माध्यम से वह अन्य स्थानों पर पहुँच गया था।

(1) दैनिक जागरण 19 जुलाई, 2004 में प्रकाशित सूचना पर आधारित।

शब्दावली (Terminology) :- किसी भी व्यवस्थित अध्ययन के लिए एक सुनिश्चित शब्दावली अनिवार्य आवश्यकता होती है। अतः पुराविदों ने प्रागैतिहासिक काल के विभाजन के लिये एक अनेक शब्दावलियों को प्रस्तुत किया। 1776 ई० में प्रो० एफ० शुम (Suhm) ने डेनमार्क के प्रागैतिहास के सांस्कृतिक चरणों को तीन कालों में विभाजित किया।

(1) पाषाण काल (2) कांस्य काल (3) लौह काल

1836 ई० में टामसेन (Tomsen) ने इसी का अनुकरण किया। फ्रांसीसी

विद्वान सर जान लब्बक जो बाद में लार्ड एवबरी नाम से जाने गये ने पाषाण काल का विभाजन पूर्व पाषाण में किया जो पाषाण उपकरणों में प्रारूप एक तकनीक के आधार पर किया गया था। कुछ समय बाद यह अनुभव किया गया कि नवपाषाण मनुष्य के सांस्कृतिक इतिहास के अपेक्षाकृत नूतन भूत काल का प्रतिनिधित्व करता है। इस कारण पूर्व पाषाण काल के विस्तृत अवधि के पुनर्विभाजन की आवश्यकता प्रतीत हुई। अतः लार्तत (Lartet) ने 1870 ई० के दशक में इसका विभाजन प्रारम्भिक पूर्व पाषाण, मध्य पूर्व पाषाण एवं उच्च पूर्व पाषाण, इन तीन कालों में किया है। यह विभाजन मुख्यतः विभिन्न पाषाण उद्योगों के अनुसार चलने वाले प्राणि समूह में परिवर्तन को दृष्टि में रखकर किया गया था। लार्तत द्वारा प्रस्तावित विभाजन ही सामान्यतः विश्व प्रागैतिहास के संदर्भ में स्वीकृत है। 1961 ई० में प्रथम एशियाटिक पुरातत्व सम्मेलन दिल्ली में आयोजित किया गया जिसमें यह मत दिया गया कि चूंकि भारत के तथा अफ्रीका के पाषाणकाल के अधिक निकटता है अतः वहां की शब्दावली मानते हुए भारत के लिए भी पूर्व, मध्य एवं उत्तर पाषाण काल शब्दावली प्रयोग किये जाने का सुझाव सामने आया। इसके पीछे मुख्य तर्क यह था कि भारत के उच्च पुरापाषाण कालीन

सामग्री कहीं मिलती।
1960 ई० के पहले पूर्व पाषाण काल को प्रस्तर युग (Stone Age) कहा जाता था क्योंकि यह माना गया कि भारत में कोई उत्तर पाषाण युग हो नहीं था। अतः समस्त अत्यन्त नूतन कालीन संस्कृति का विभाजन पूर्व प्रस्तर एवं मध्य प्रस्तर काल में कर दिया गया। किंतु देश के विभिन्न भागों में उत्तर पाषाण काल के साक्ष्य मिलने जाने से पाषाण काल का विभाजन तीन कालों में कर दिया गया। पूर्व अथवा पुरा पाषाण काल के विषय में सुव्यवस्थित एवं क्रमबद्ध अनुसंधान विशेष रूप से फ्रांस में प्रारंभ हुआ था। अतः वहीं की शब्दावली को मानक रूप में स्वीकार किया जाता है अफ्रीका में पुरापाषाणकाल के लिये प्रारम्भिक (Early) तथा उच्च (Middle) तथा उत्तर (Late) पाषाण काल नाम दिया गया। यूरोप में इसका नामकरण निम्न (Lower) मध्य (Middle) तथा उच्च (Upper) पूर्व या पुरापाषाण काल के रूप में हुआ। उच्च पुरा पाषाण काल का विशिष्ट उपकरण ब्लेड बुरिन (Blade Burin) है चूंकि भारत के विभिन्न भागों में अब उच्च पुरापाषाण संस्कृति के साक्ष्य प्रकाश में आ चुके हैं। अतः भारतीय पाषाणकालीन संस्कृति का नाम करण भी यूरोप के अनुसार ही किया जा सकता है जो निम्नवत् है।